कथा महाश्वेता देवी
क्यूँ-क्यूँ लड़की
अनुवाद सुषमा
चित्र कन्यिका किणी

"All over India there are children, tribal and non-tribal, who always ask the question 'Why?'. I have seen many children like this, and I have selected Moyna's experience for this book.

"I have been very close to the tribals, especially in Bihar, West Bengal, Jharkhand and Gujarat. In these tribal belts, which are generally hilly, schools are far away. You have to cross many low hills and walk five to six kilometres to reach the schools. High schools are at least ten kilometres away and there are no roads. It is difficult for teachers to reach pupils and for pupils to reach teachers.

"Moyna is a Shabar. The Shabar samiti started in 1968. Till date it has set up many schools. They are increasingly doing better. The books are better, the facilities are better.

"I have found that because tribal children are close to nature in mind, it is easy to explain things scientifically to them. They truly love nature. In writing about Moyna, I have written about so many children. And I write because I love children."

MAHASWETA DEVI

कथा **महाश्वेता देवी**

क्यूँ-क्यूँ लड़की

अनुवाद **सुषमा**

चित्र **कन्यिका किणी**
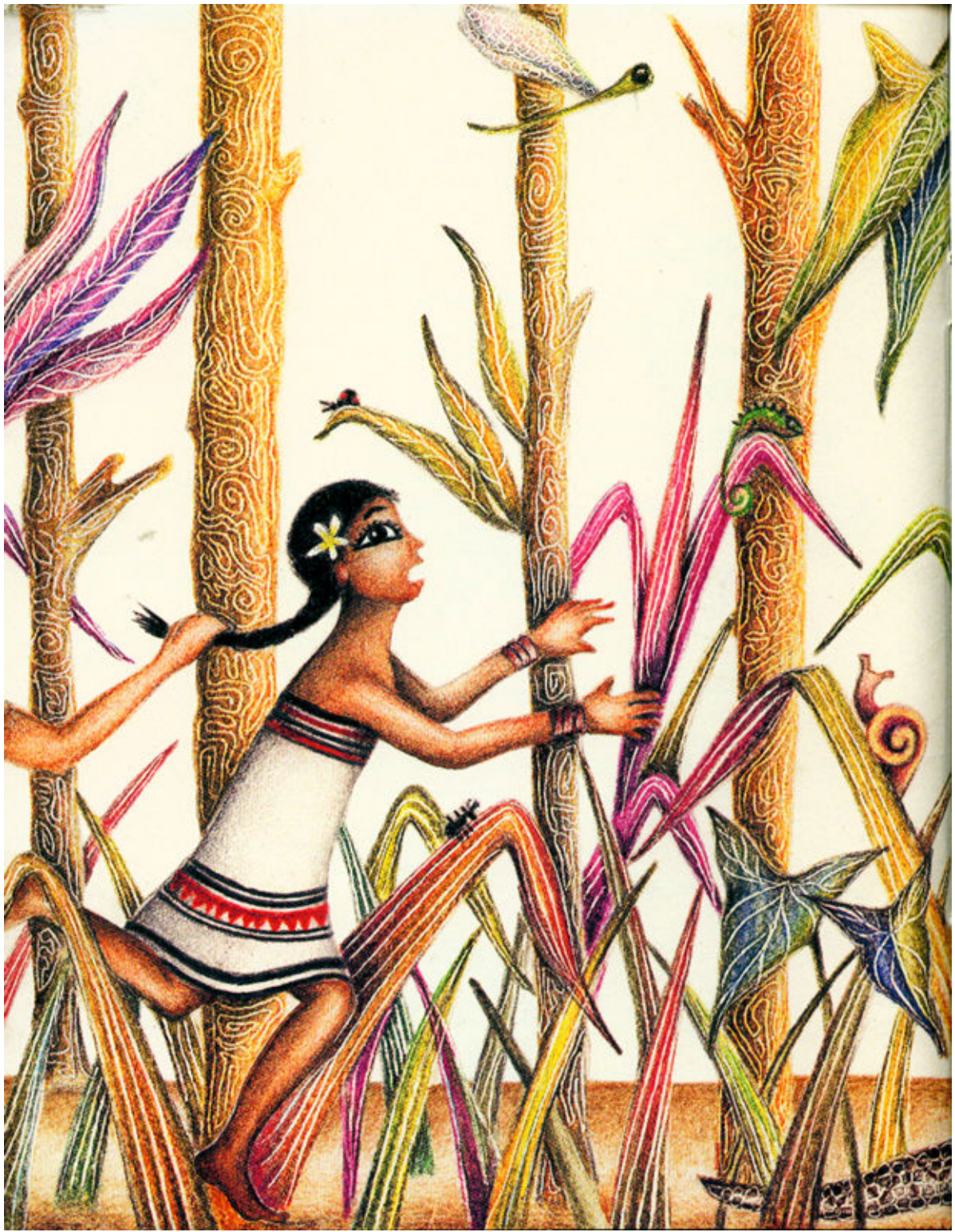
"पर क्यूँ?"

यह सवाल था एक छोटी-सी, कोई दस बरस की लड़की का। वह एक बड़े-से साँप के पीछे भाग रही थी। मैं उसके पीछे दौड़ी। उसकी चोटी पकड़कर, उसे पीछे की ओर खींचते हुए मैं चिल्लाई, "नहीं, मोयना, मत करो!"

"क्यूँ न करूँ?" उसने पूछा।

"यह कोई धामिन साँप या घास साँप नहीं है, यह नाग है," मैंने जवाब दिया।

"मैं नाग को क्यूँ न पकड़ूँ?"

"क्यों पकड़ना है तुम्हें?"

"हम साँप खाते हैं, पता है," मोयना ने कहा। "सिर काटते हैं, चमड़ी बेचते हैं, माँस पकाते हैं।"

"हाँ, पर इस बार मत करो," मैंने कहा।

"मैं करूँगी, मैं करूँगी!"

"नहीं, बच्चे।"

"पर क्यूँ?"
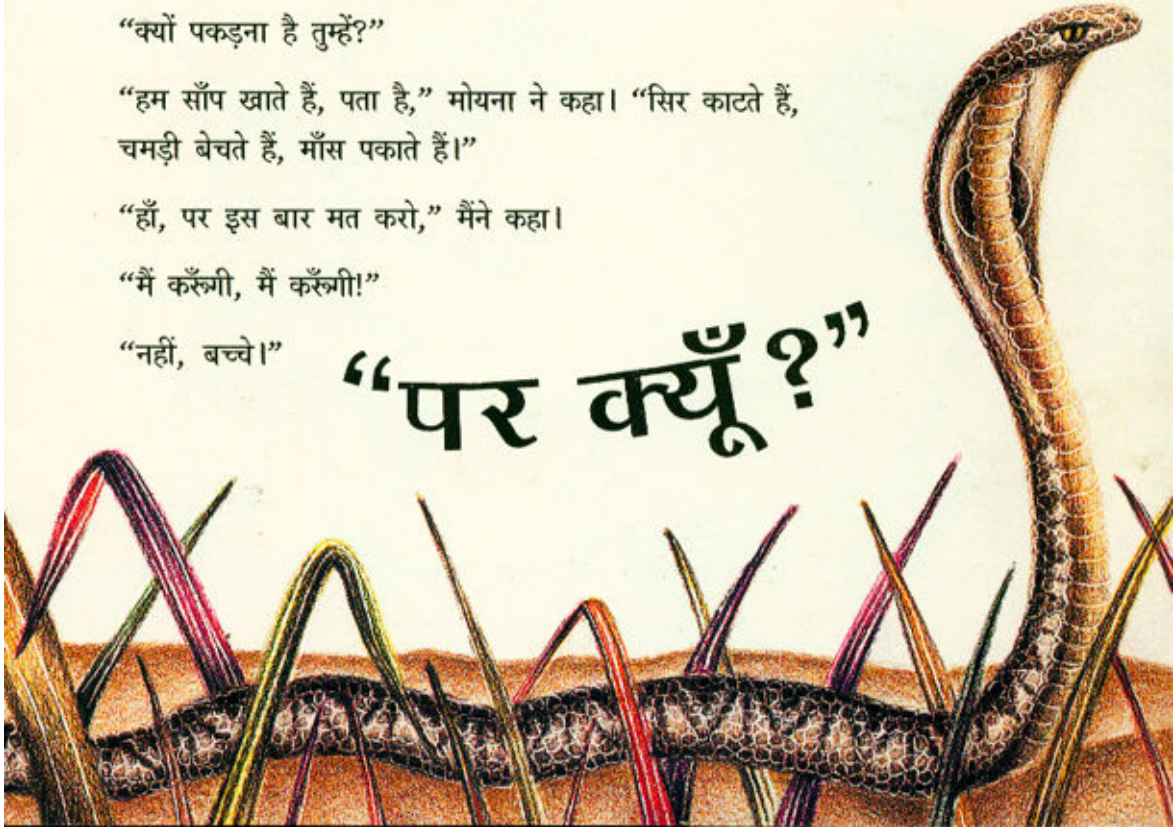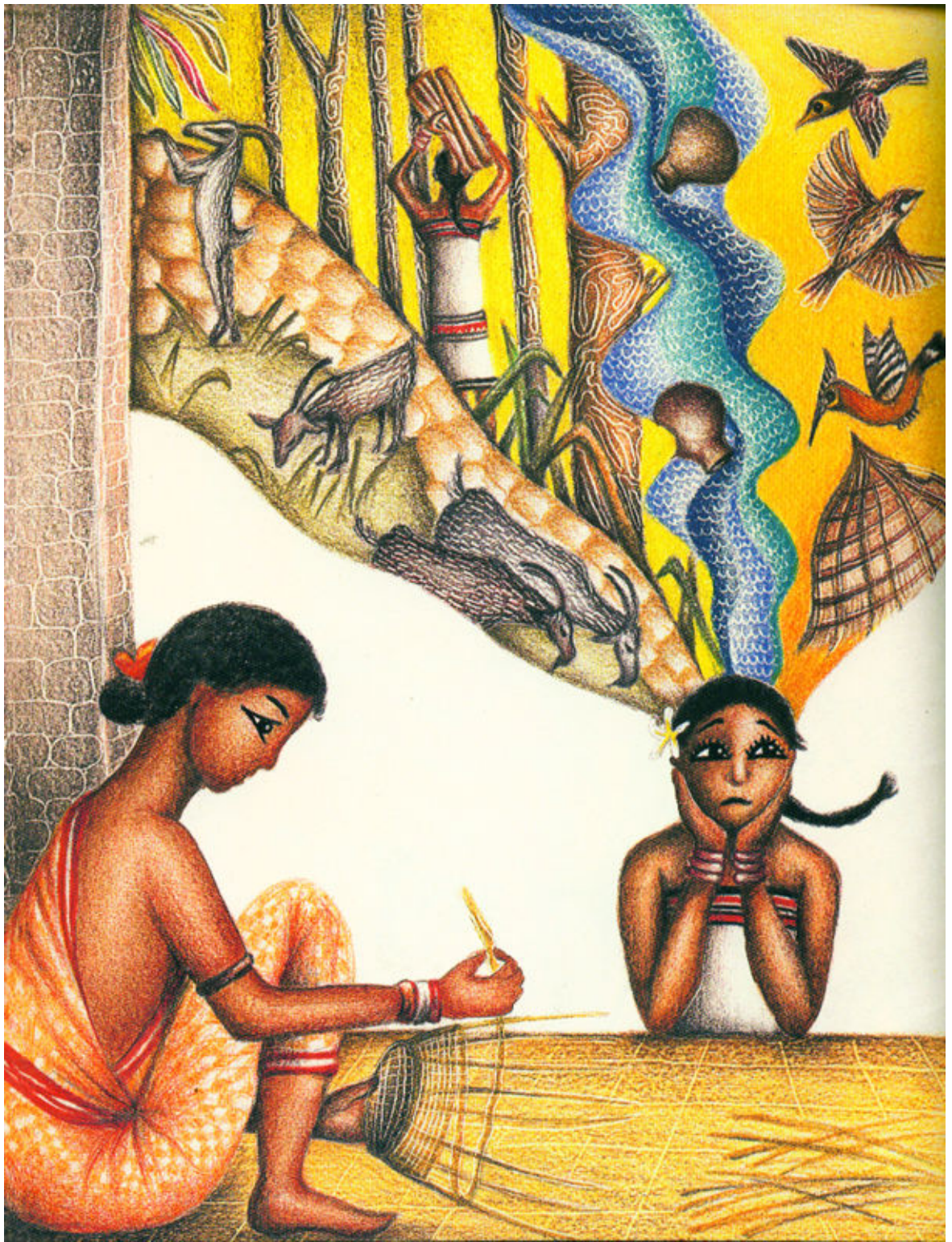
मैं मोयना को वापस समिती के दफ़्तर में खींच लाई जहाँ मैं काम करती थी। उसकी माँ, खिरी, वहाँ टोकरी बिन रही थी। समिती एक ऐसी जगह थी जहाँ लोग पढ़ना-लिखना सीख सकते थे या फिर मिलकर नाचते-गाते।

"आओ," मैंने मोयना से कहा। "आओ और थोड़ी देर आराम कर लो।"

"क्यूँ?"

"क्या तुम थक नहीं गई?" मैंने पूछा।

मोयना ने ज़ोर से सिर हिलाया।

"बकरियाँ घर कौन लाएगा ?
और लकड़ियाँ कौन इकट्ठी करेगा और पानी कौन लाएगा ?
और पंछियों के लिए जाल कौन बिछाएगा ?"

एक के बाद एक सवाल आने लगे।
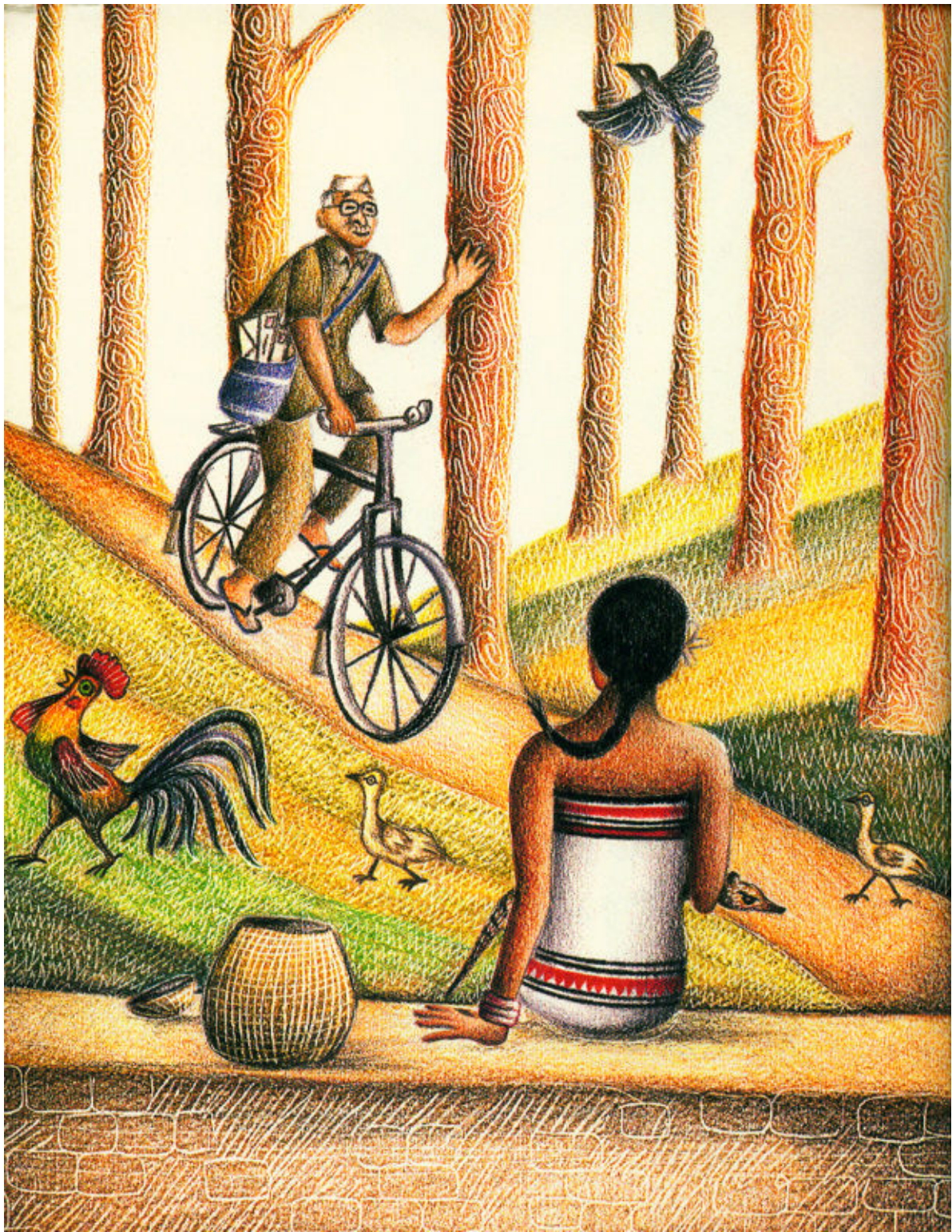
"मोयना, बाबू ने हमें जो चावल भेजे थे, उसके लिए उनसे धन्यवाद कहना मत भूलना," खिरी ने कहा।

"क्यूँ कहूँ?" मोयना ने कहा। "क्या मैं गोशाला में झाड़ू नहीं लगाती और उनके हज़ारों काम नहीं करती?

क्या कभी उन्होंने मेरा धन्यवाद किया? तो मैं क्यूँ करूँ?"

यह कहकर मोयना भाग गई।

खिरी ने साँस छोड़ते हुए सिर हिलाया।
"ऐसी लड़की कभी नहीं देखी।
बस, हर समय 'क्यूँ' करती रहती है। तभी तो डाक-बाबू इसे 'क्यूँ-क्यूँ लड़की' बुलाते हैं," उसने कहा।

"मुझे वह बहुत अच्छी लगती है," मैंने कहा।

"पर है बहुत ज़िद्दी," खिरी ने पलटकर कहा।
"बस, मानेगी ही नहीं।"
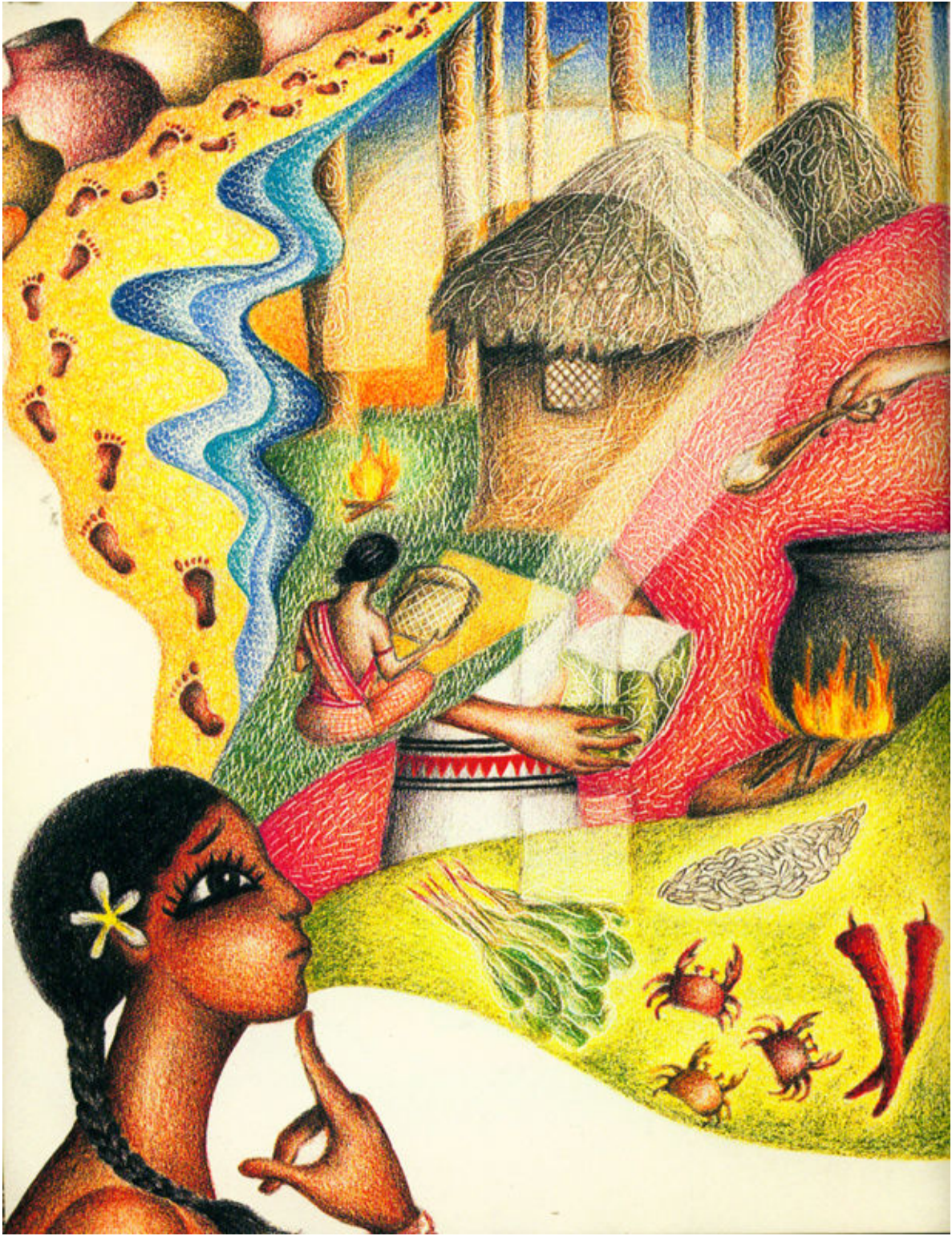
मोयना एक शबर थी। शबर एक निर्धन जनजातीय वर्ग के थे। उनकी अपनी कोई ज़मीन नहीं थी पर उन्हें कोई शिकायत नहीं। सिर्फ़ मोयना ही थी जिसके सवाल बढ़ते ही जाते थे।

"मुझे पानी लाने के लिए इतनी दूर नदी तक क्यूँ जाना पड़ता है ?
हम पत्तों की झोंपड़ी में क्यूँ रहते हैं ?
हम दिन में दो बार भात क्यूँ नहीं खा सकते ?"

मोयना गाँव के ज़मीनदारों और बाबुओं की बकरियों की देखभाल करती थी, पर वह न किसी की चिरौरी करती और न किसी का एहसान मानती थी। वह अपना काम करती और शाम को घर आ जाती।

"मैं क्यूँ उनकी जूठन खाऊँ ?" वह कहती।

"मैं साग और भात और केकड़ा और लाल मिर्च के साथ मज़ेदार खाना पकाऊँगी और अपने घरवालों के साथ खाऊँगी।"

वैसे शबर जाति के लोग आमतौर पर अपनी बेटियों को काम पर नहीं भेजते थे। पर मोयना की माँ की एक टाँग खराब थी और वह ठीक से चल नहीं पाती थी। उसके पिता काम की खोज में दूर जमशेदपूर चले गए थे और उसका भाई, गोरो, हर रोज़ लकड़ियाँ चुनने जंगल जाता था। इसलिए मोयना को काम करना पड़ता था।

क्या वक्त बीता मेरा
मोयना के साथ!
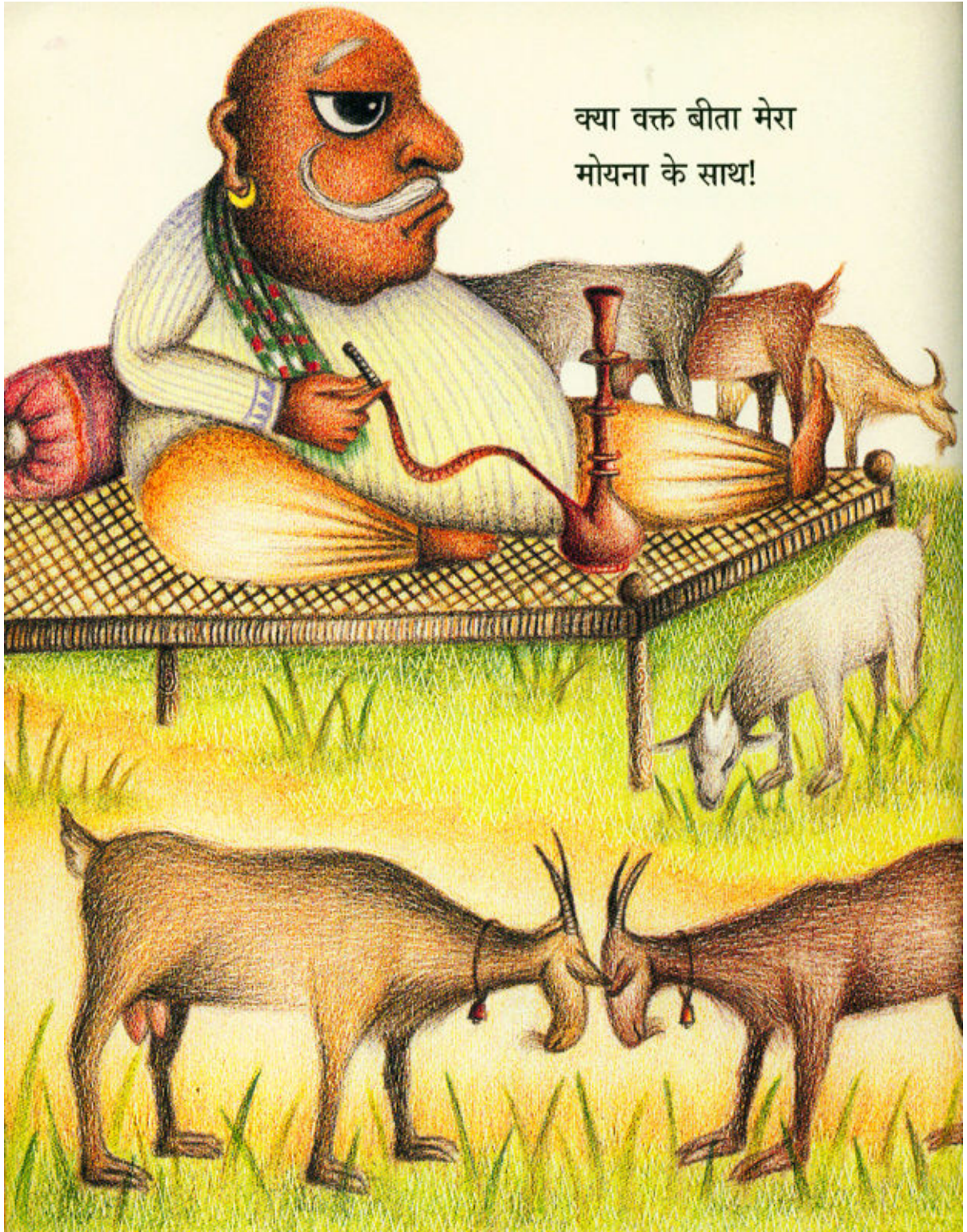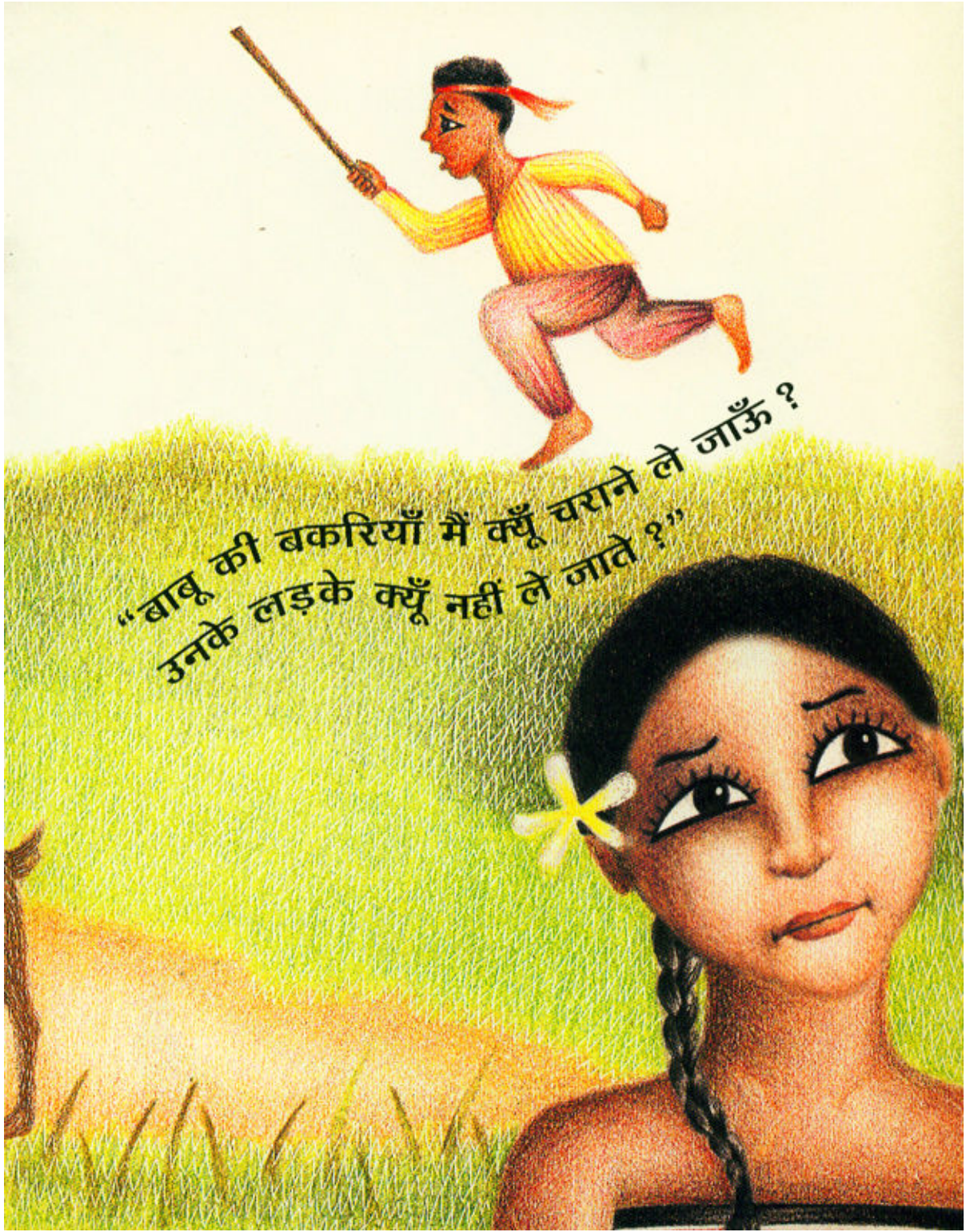
"बाबू की बकरियाँ मैं क्यूँ चराने ले जाऊँ ?
उनके लड़के क्यूँ नहीं ले जाते ?"
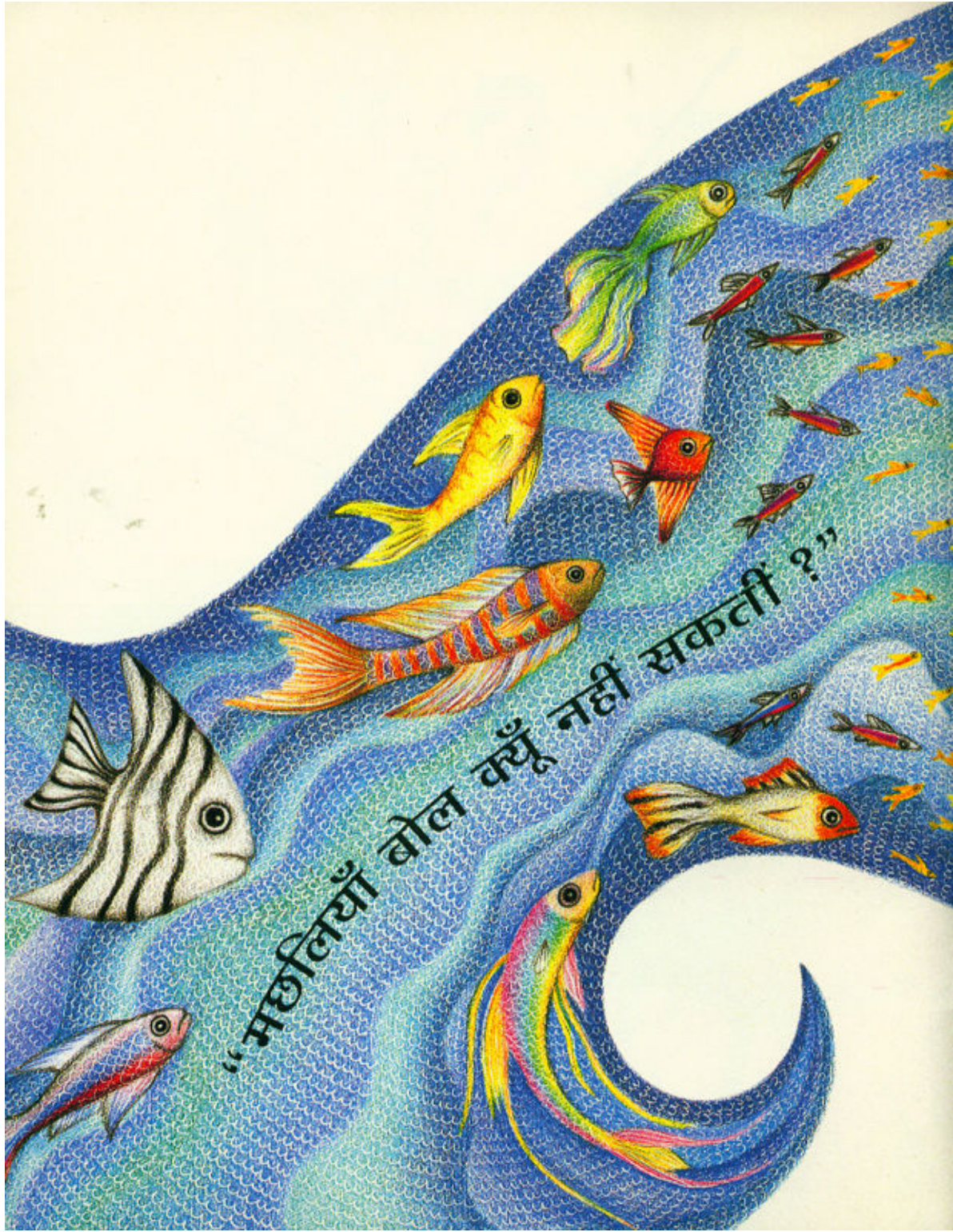
"मछलियाँ बोल क्यूँ नहीं सकतीं ?"
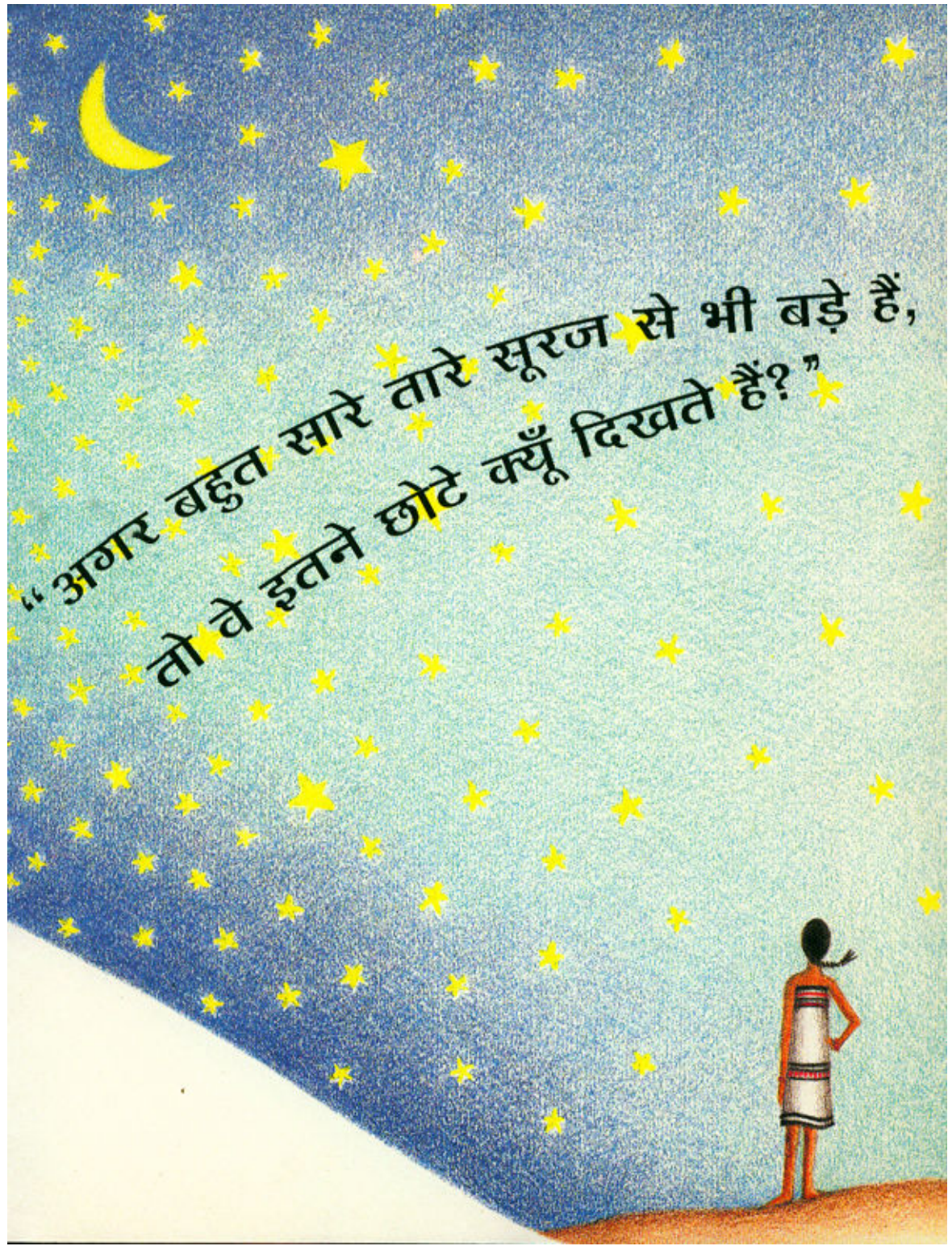
"अगर बहुत सारे तारे सूरज से भी बड़े हैं,
तो वे इतने छोटे क्यूँ दिखते हैं?"

एक रात उसने मुझसे पूछा,

"तुम सोने से पहले किताबें क्यूँ पढ़ती हो?"

"क्यूँकि किताबों में तुम्हारे 'क्यूँ' के उत्तर हैं," मैंने कहा।
और पहली बार मोयना चुप रही।

उसने कमरे की सफ़ाई की, पेड़-पौधों को पानी दिया और नेवले को मछली खिलाई। फिर वह मेरे पास आई और कहने लगी, "मैं पढ़ना सीखकर अपने सवालों के जवाब खोजूँगी।"

जब मोयना बकरियाँ चराती तो दूसरे बच्चों को वह सब बताती जो उसने मुझसे सीखा था।

"बहुत सारे तारे सूरज से भी बड़े हैं, पर वे बहुत दूर रहते हैं, इसलिए छोटे नज़र आते हैं। सूरज पास होता है, इसलिए बड़ा दिखता है। मछलियाँ हमारी तरह बोल नहीं सकतीं। उनकी अपनी एक मछली-भाषा होती है जो मूक होती है। पृथ्वी गोल है, क्या तुम जानते थे?"
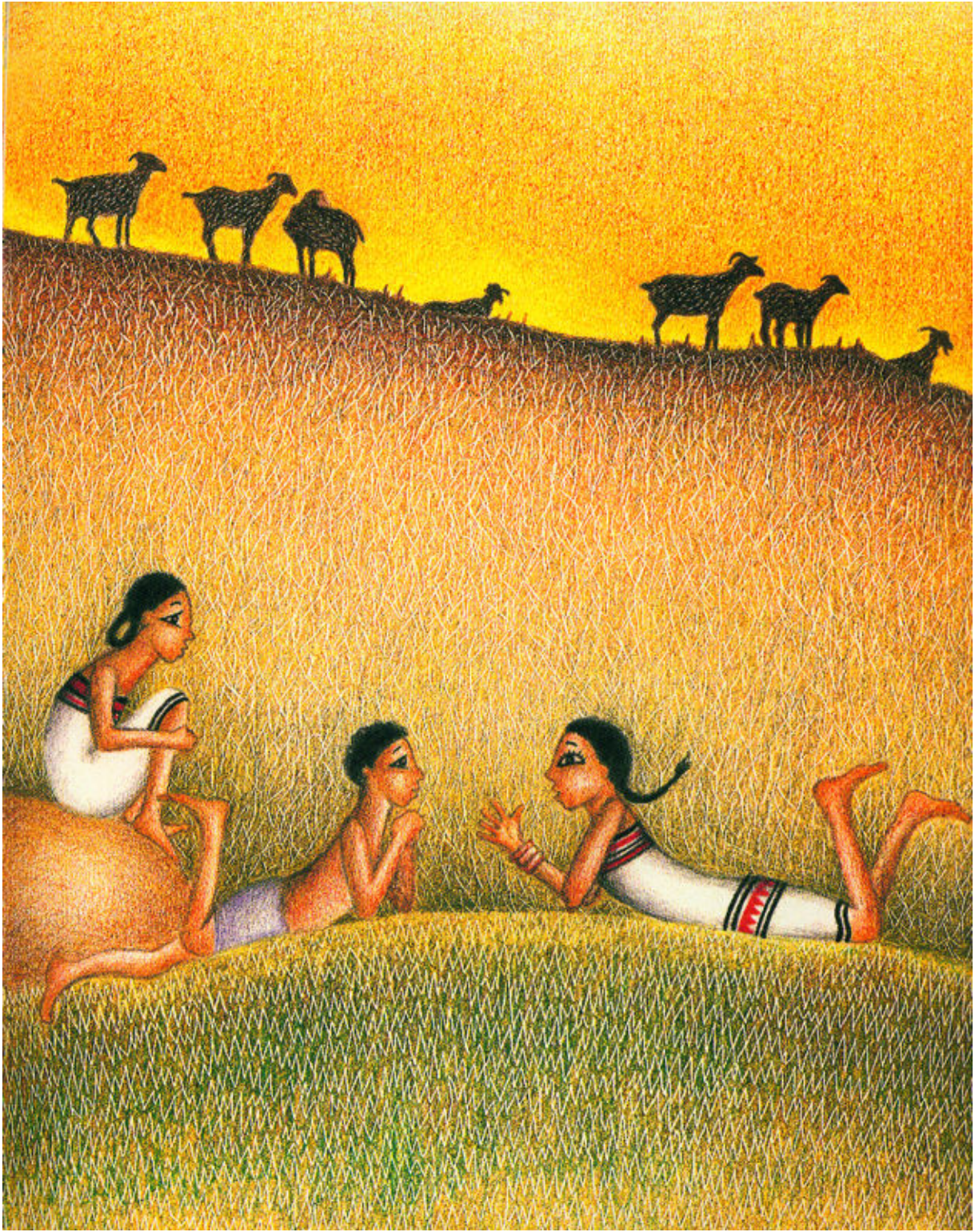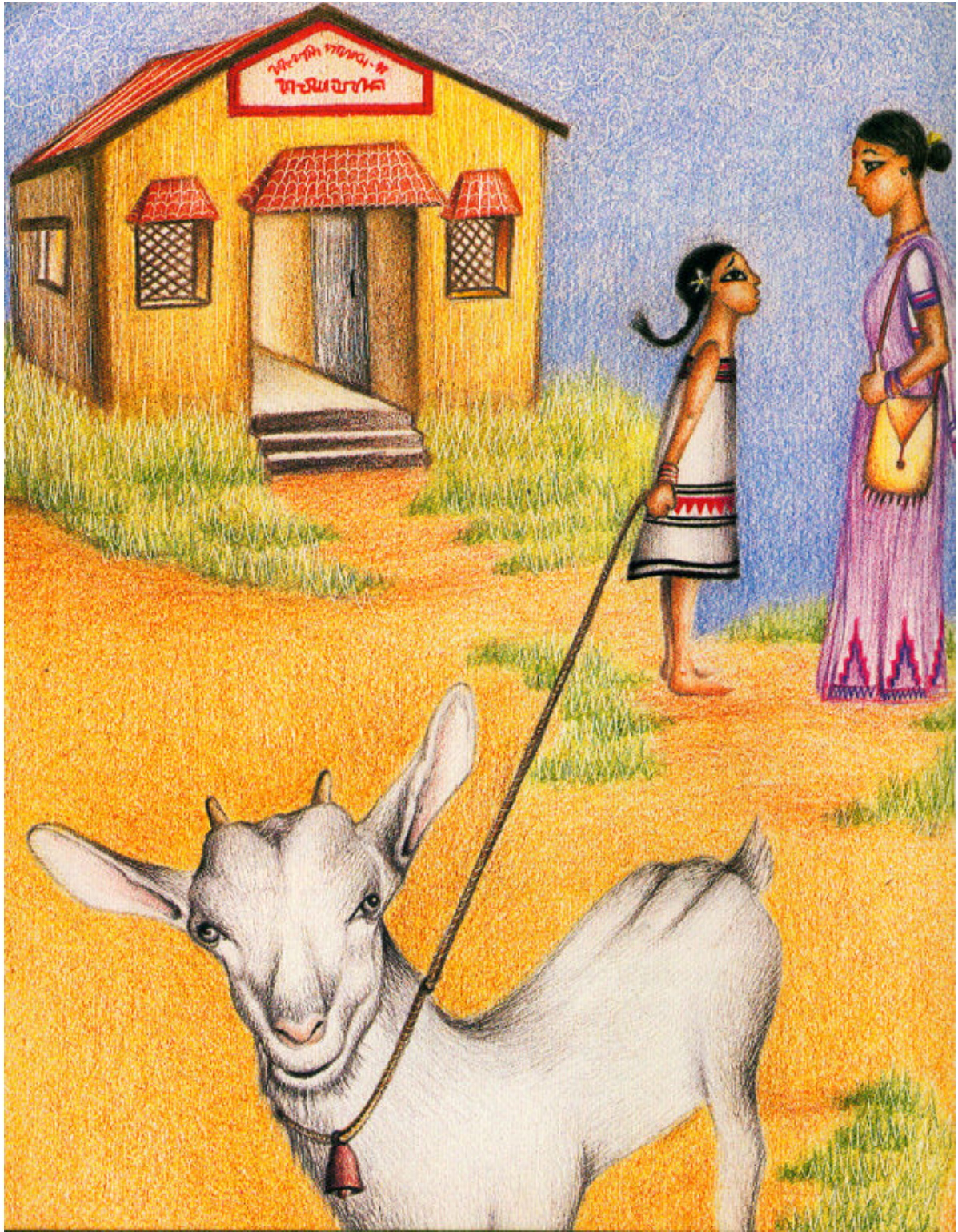
एक साल बाद जब मैं गाँव लौटी, तो सबसे पहले मैंने जो आवाज़ सुनी वह थी मोयना की आवाज़। "स्कूल बंद क्यूँ है?" उसने समिती में अंदर आते ही मालती को ललकारा, साथ में एक मिमियाती बकरी को खींचते हुए।

"क्या मतलब है तुम्हारा, 'क्यूँ'?" मालती ने पूछा।

"मैं भी क्यूँ न पढ़ूँ?" मोयना ने पूछा।

"तुम्हें रोक कौन रहा है?"

"पर यहाँ तो कोई पढ़ाई हो ही नहीं रही।"

"आज के लिए स्कूल बंद हो चुका है," मालती ने समझाया

"क्यूँ?"

"क्यूँकि, मोयना, मैं सुबह 9 से 11 बजे तक पढ़ाती हूँ," मालती ने कहा।

मोयना पैर पटक कर बोली, "फिर समय बदलते क्यूँ नहीं? सुबह मुझे बकरियों को चराने ले जाना होता है। मैं बस 11 बजे के बाद ही आ सकती हूँ। मुझे पढ़ाओगे नहीं तो मैं सीखूँगी कैसे? मैं उस बुढ़िया से" – यानी कि मुझ से! – "कह दूँगी कि हम गाय-बकरियाँ चराने वालों में से कोई नहीं आ सकता, अगर समय बदला न गया तो।"

तब उसने मुझे देखा और अपनी बकरी को लेकर भाग गई।
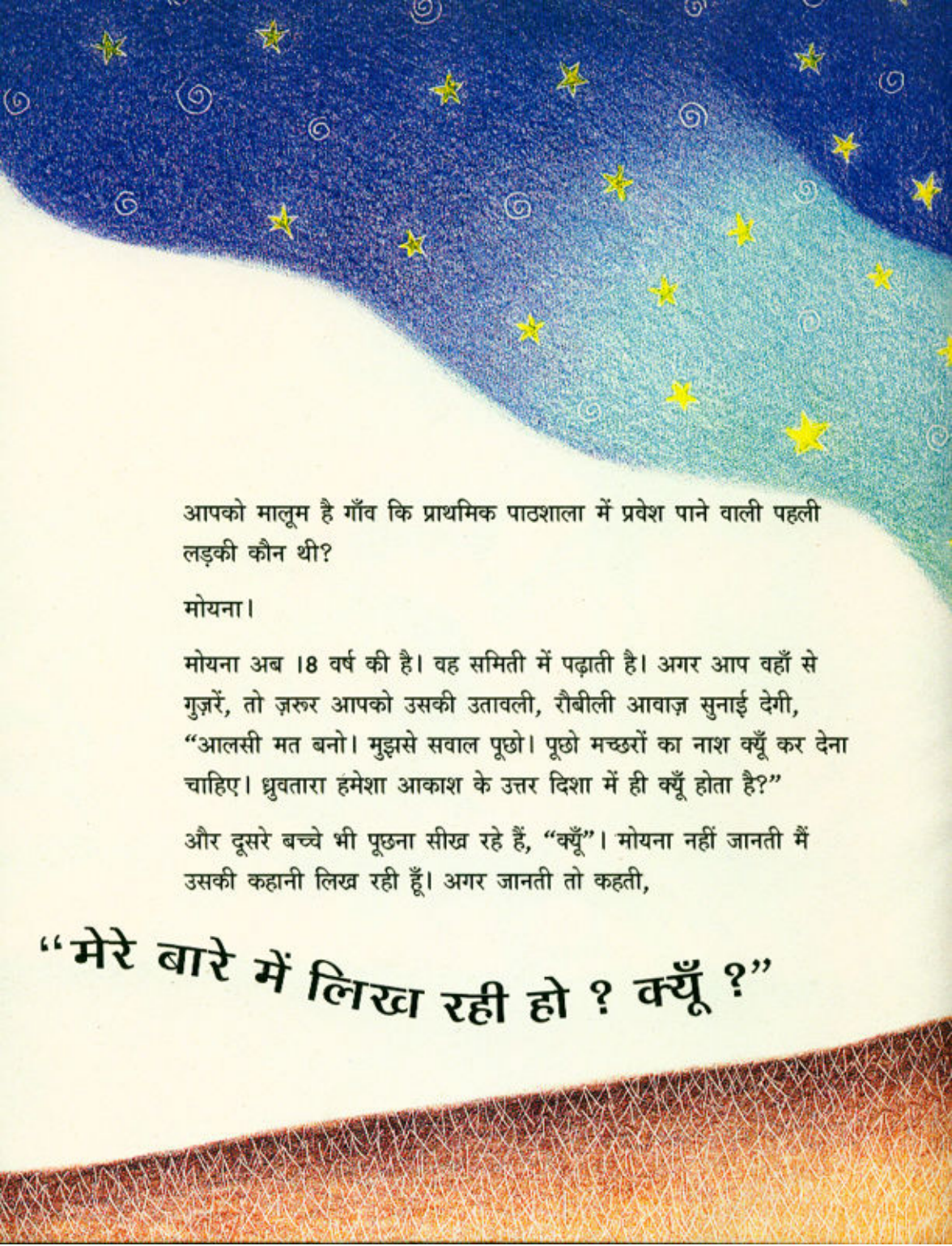
मैं शाम को मोयना के घर गई। रसोई में चूल्हे के पास बैठी, वह अपनी छोटी बहन और बड़े भाई को बता रही थी, "एक पेड़ काटो, तो दो और उगाओ।

खाने से पहले हाथ धोने चाहिए, पता है क्यूँ?
नहीं तो पेट में दर्द होगा।
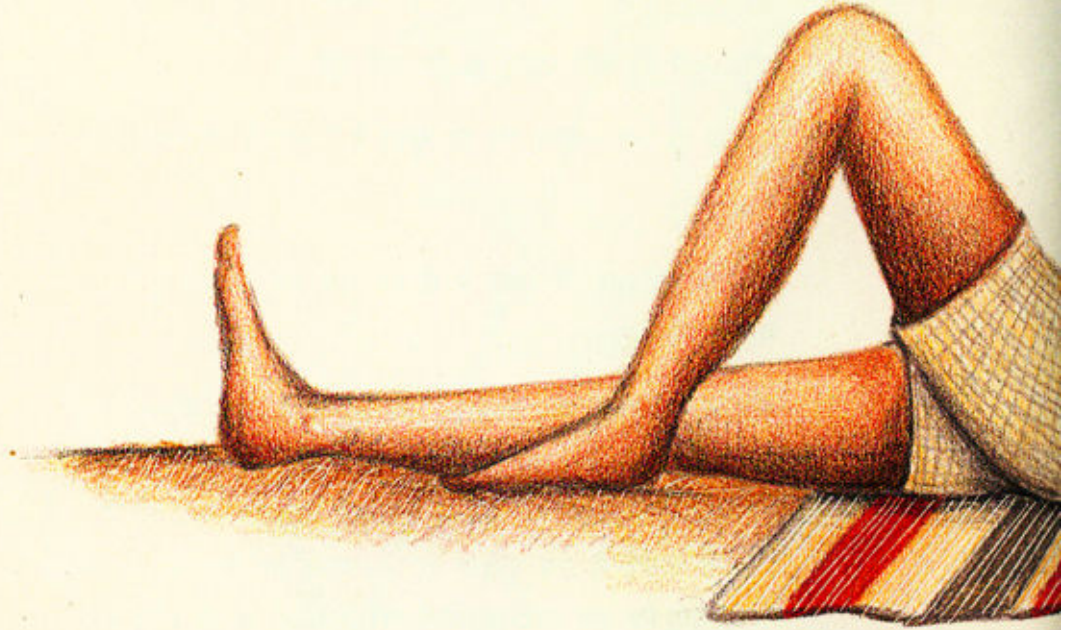
तुम्हें कुछ नहीं पता, जानते हो क्यूँ?
क्यूँकि तुम समिती में पढ़ने नहीं जाते।"
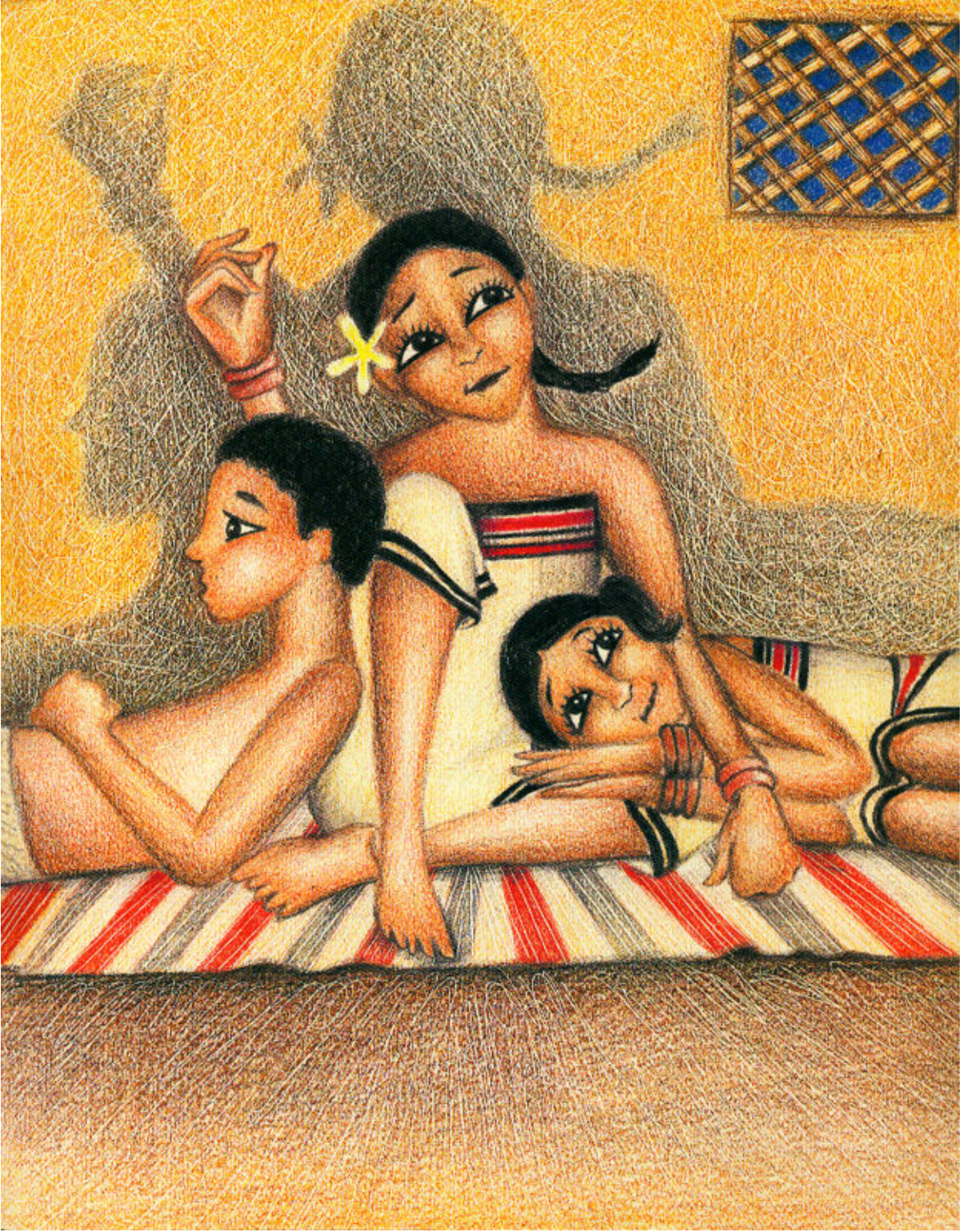
आपको मालूम है गाँव कि प्राथमिक पाठशाला में प्रवेश पाने वाली पहली लड़की कौन थी?

मोयना।

मोयना अब 18 वर्ष की है। वह समिती में पढ़ाती है। अगर आप वहाँ से गुज़रें, तो ज़रूर आपको उसकी उतावली, रौबीली आवाज़ सुनाई देगी, "आलसी मत बनो। मुझसे सवाल पूछो। पूछो मच्छरों का नाश क्यूँ कर देना चाहिए। ध्रुवतारा हमेशा आकाश के उत्तर दिशा में ही क्यूँ होता है?"

और दूसरे बच्चे भी पूछना सीख रहे हैं, "क्यूँ"। मोयना नहीं जानती मैं उसकी कहानी लिख रही हूँ। अगर जानती तो कहती,

"मेरे बारे में लिख रही हो ? क्यूँ ?"
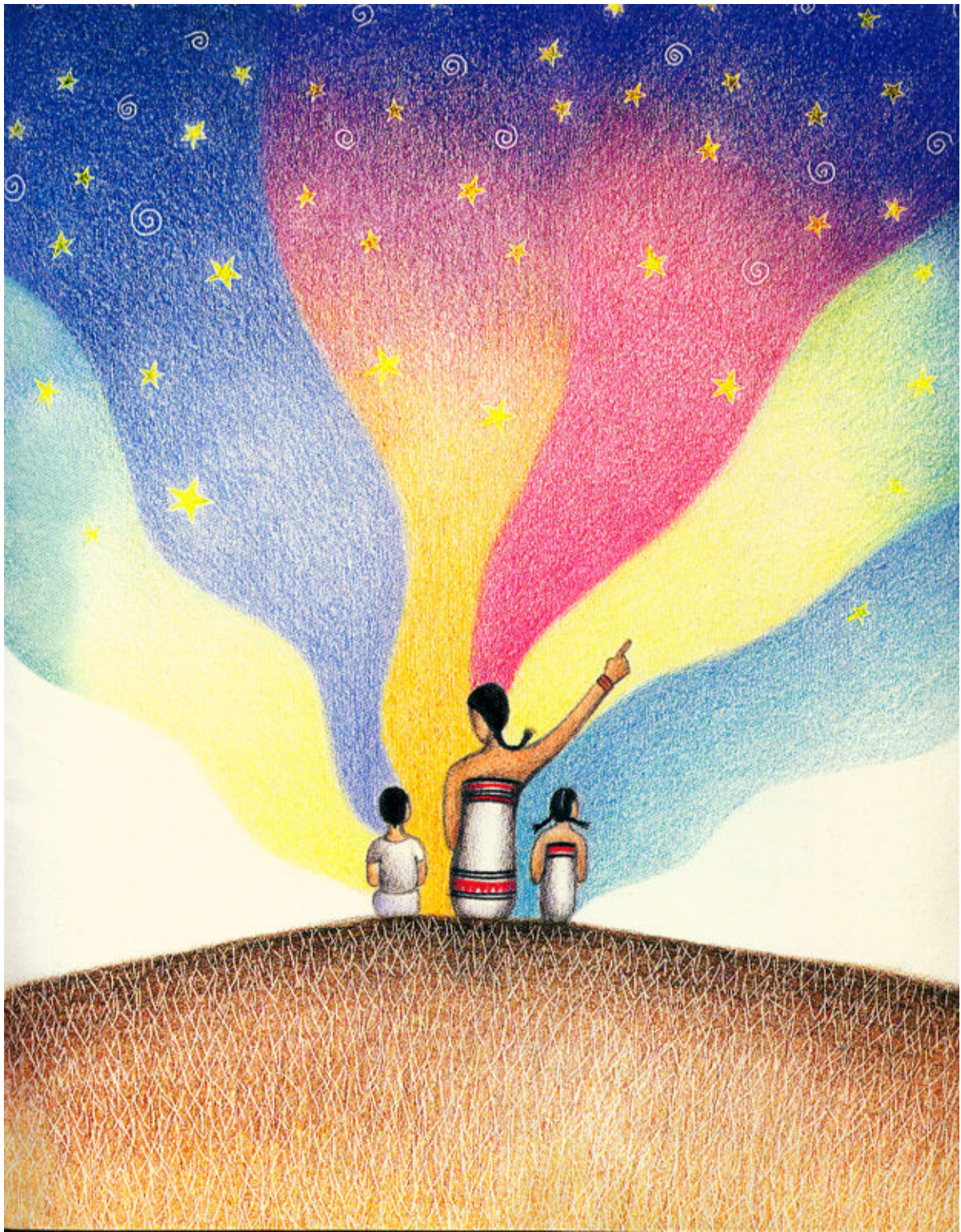
शब्दपंछी पुस्तकमाला यह पारम्परिक एवं आधुनिक कहानियों की एक श्रृंखला है, जो हमारी इस दुनिया की समानताओं और असमानताओं को उभारती है। नए-नए भाषा और संस्कारों के शब्द-विचार समझाने के लिए पन्नों पर 'शब्द-पंछी' हाज़िर हो जाते हैं।

महाश्वेता देवी भारत के श्रेष्ठ रचनाकारों में से एक हैं। वे कई वर्षों से बंगला में लिख रही हैं और उतने ही समय से जनजातीय वर्गों के साथ काम भी कर रही हैं। उन्होंने जनजातीय लोगों और पीड़ित वर्गों के मौखिक इतिहास का अध्ययन किया है और नियमित रूप से समाचार पत्रों में लिखती आ रही हैं। वे कहती हैं कि लिखते समय वे अपने सभी संस्मरण, स्मृतियाँ, अध्ययन, निजी अनुभव और अर्जित जानकारी का उपयोग करती हैं। महाश्वेता देवी अपने लेखन में हमेशा राजनीति, लिंग और वर्गभेद की समस्याओं को उभारती हैं, चाहे वे बच्चों के लिए ही क्यों न हो। यह इनकी पहली सचित्र पुस्तक है।

सुषमा को रंगमंच और फ़िल्मों से जुड़े होने के साथ-साथ बच्चों के लिए कविता और कहानियाँ लिखना बहुत प्रिय है। बच्चों के साथ नाटक, थिएटर वर्कशाप आदि करना इन्हें विशेष भाता है।

कन्यिका किणी ने मोयना की कहानी को काल्पनिक और मौलिक रूप से चित्रित किया है। कन्यिका सृष्टि स्कूल ऑफ आर्ट, डिज़ाइन ऐंड टेक्नोलोजी में पढ़ती है।

HINDI
ISBN 81-8146-020-0
Age 6+
Rs 100